प्रथमः पाठः

मङ्गलम्

(उपसर्ग, अयादिसन्धि)

(भारत की प्राचीन परम्परा रही है कि मङ्गलाचरण से ही कोई महत्त्वपूर्ण कार्य आरम्भ होता है । कुछ विद्वानों ने तो कार्य के आदि, मध्य और अन्त में भी मङ्गल करने की बात कही है। मङ्गल के अन्तर्गत प्रायः आराध्य देवताओं या गुरुओं की वन्दना, प्रभुप्रार्थना अथवा कार्य की सफलता की शुभकामना होती है । प्रस्तुत पाठ में ऋग्वेद तथा उपनिषदों के मन्त्र मङ्गल के रूप में दिये गये हैं जिनमें सहयोग एवं गुरु-शिष्य के अभ्युदय की कामना की गई है।)

1. सगच्छध्व सवदध्व स वा मनाास जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥ 1 ॥

2. सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ 2 ॥

Developed by: ABSOL www.absol.in

शब्दार्थ :

संगच्छध्वम्	=	तुम लोग साथ चलो
संवदध्वम्	=	तुमलोग साथ बोलो
वो (वः)	=	तुम्हारे
मनांसि	=	मन (बहुवचन)
सं जानताम्	=	एक साथ चिन्तन करें
देवाः	=	श्रेष्ठ पुरुष
पूर्वे	=	प्राचीन काल के
भागम्	=	अपने प्राप्य अंश को
सञ्जानानाः	=	समान चिन्तन करते
सह	=	साथ
नौ	=	हमदोनों
उपासते	=	समीप रहते हैं, ग्रहण करते हैं
भुनक्तु	=	भोजन करे, भोगे
अधीतम्	=	ज्ञान, पढ़ा हुआ विषय
मा	=	नहीं
विद्विषावहै	=	(हमदोनों) विद्वेष करें

नाववतु (नौ + अवतु) = हमदोनों की रक्षा करें

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद :

नाववतु = नौ + अवतु

नावधीतमस्तु = नौ + अधीतम् + अस्तु

अभ्यासः

मौखिकः

1. मन्त्रौ श्रावयत ।
2. स्वस्मरणेन कञ्चित् मङ्गलश्लोकं श्रावयत ।
3. उच्चैः गायत – (क) मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः ।
   मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ।।

4. रिक्तस्थानानि पूरयत

(क) ..... संवदध्वं सं ..... । देवा भागं .....
सञ्जानाना .....।।

(ख) पावकः = पौ + ...

नायकः = नै + ...

.....नम् = ...+ अनम्

नाविकः = ... + ...

पवनः = ... + ...

भवनम् = भो ..... +

5. संस्कृते अनुवादं कुरुत –

(क) वह प्रतिदिन विद्यालय जाता है ।

(ख) मेरे साथ तुम भी जाओगे ।

(ग) सभी सुखी हो ।

(घ) संसार ही परिवार है ।

(ङ) दिल्ली भारत की राजधानी है ।

6. वाक्यानि रचयत–

यथा – ऋतुराजः – वसन्तः ऋतुराजः कथ्यते ।

(क) दृष्ट्वा ..... ।

(ख) महोत्सवः ..... ।

(ग) शनैः शनैः ..... ।

(घ) गच्छन्ति ..... ।

(ङ) वेदेषु ..... ।

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत –

यथा – सर्वेषामेव – सर्वेषाम् + एव

अधीतम् – ..... + ...

अध्ययनमेव – ..... + ...

वर्षमस्ति – ..... + ...

समुद्रमिव – ..... + ...

8. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –

(क) सिंह:, कुक्कुर:, गर्दभ:, भल्लूक:, शुक:

(ख) जम्बु: , आम्रम्, नारिकेलम्, ओदनम्, अमृतफलम्

(ग) रजक:, नापित:, लौहकार:, स्वर्णकार:, वस्त्रम्

(घ) मस्तकम्, ग्रीवा, ओष्ठ:, पौत्र:, कपोल:

(ङ) दशानन:, सप्त, शतम्, विंशति:, द्वादश

9. कोष्ठे दत्तानां लट्रूपाणां लङ्रूपाणि (एकवचने) लिखत –

यथा – उज्ज्वल: पुस्तकं (पठति) – उज्ज्वल: पुस्तकम् अपठत्।

(क) शाम्भवी जलं (पिबति) –

(ख) आलोक: उच्चै: (हसति) –

(ग) इकबाल: पत्रं (लिखति) –

(घ) आफताब: कुत्र (गच्छति) ?

(ङ) अनुष्का श्लोकं (स्मरति) –

10. भवान् / भवती विद्यालयस्य प्राङ्गणस्य चित्रे किं पश्यति ?

यथा – 1. अहं चित्रे एकं वृक्षं पश्यामि।

2. .... ।

3. .... ।

4. .... ।

5. .... ।

6. .... ।

योग्यताविस्तार:

भारतवर्ष की धार्मिक परम्परा में ऐसा विश्वास रहा है कि किसी कार्य को आरम्भ

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

करते समय तथा उसके समापन के समय माङ्गलिक वचनों का उच्चारण किया जाये। वैयाकरण पतञ्जलि ने कहा है – **मङ्गलादीनि मङ्गलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते ।** अर्थात् जिन शास्त्रों के आरम्भ और अन्त में मङ्गल कार्य होते हैं वे बहुत दूर तक और बहुत दिनों तक प्रचलित रहते हैं। इसलिए कार्य के स्थायित्व एवं लोकप्रिय होने के लिए आरम्भ में मङ्गलाचरण आवश्यक है । इसमें किसी देवता या आराध्य व्यक्ति की वन्दना की जाती है अथवा संसार के सुखी होने की कामना की जाती है। यद्यपि यह मङ्गल कार्य शास्त्रीय दृष्टि से प्रचलित हुआ था किन्तु आगे चलकर सभी कार्यों के लिए आवश्यक माना गया । तभी तो किसी भवन के निर्माण के पूर्व वास्तुपूजा, गृहप्रवेश में सत्यनारायण आदि की पूजा की जाती है । मध्यकाल में कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गलाचरण आवश्यक माना गया ।

भौतिकवादी युग में भी किसी–न–किसी रूप में शिलान्यास, उद्घाटन इत्यादि के कार्य मङ्गल समझ कर ही किये जाते हैं। संस्कृत में भी कहा गया था कि ग्रन्थ में नमस्कार या आशीर्वाद की [illegible] न होने पर [illegible]त्मक की केवल सूचना दे देना (वस्तुनिर्देश) भी मङ्गल का रूप है। वस्तुतः मङ्गल इस आस्था पर आश्रित है कि हमारा कार्य विघ्न–बाधा के बिना पूरा हो जाए ।

प्रस्तुत पाठ में ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का एक मन्त्र है जिसमें सभी लोगों के मिलजुल कर रहने, समान हृदय, समान विचार तथा सामञ्जस्य की कामना है । एकता का संदेश इससे मिलता है । दूसरा मन्त्र कुछ उपनिषदों के मङ्गल पाठ के रूप में है जिसमें गुरु –शिष्य के बीच सौहार्द तथा विद्या के आदान–प्रदान की भास्वरता की सुन्दर कामना है ।

QQQ